15/5/21

गृहकार्य

अहिंसा के दूत सारांश

महात्मा गांधी जी का पूरा नाम मोहन दास ~~मोहन~~ करमचंद गांधी था। उन्हें बचपन में पेड़ पर चढ़ना और हवा का आनंद लेना बहुत अच्छा लगता था, परंतु उनके पिता जी को डर लगता था कि कहीं पेड़ से गिरकर मोहन को चोट न लग जाए इसलिए वे मोहन को पेड़ पर चढ़ने से रोकते थे, परंतु मोहन को पेड़ों पर चढ़ने का इतना शौक था कि वे लुक-छिपकर पेड़ पर चढ़ने से रहन पाए। मोहन सबकी नजर बचाकर पेड़ पर चढ़ रहे थे कि तभी उनके बड़े भाई

वहाँ आ गए। उन्होंने पेड़ पर चढ़ते मोहन को उनके पैर को पकड़कर खींच लिया और मोहन नीचे गिर गए और उन्हें ज्यादा खरोंचे नहीं लगी थी और न ही ज्यादा चोट लगी। उनके उठते ही बड़े भाई ने उनको एक तमाचा मारा और बोला- "क्यों रे मोहन कितनी बार मना किया है पेड़ चढ़ने को पर नहीं चढ़ना।" तब मोहन ने माँ के पास रोते हुए जाकर कहा- "देखो माँ बड़े भाई ने हमें मारा है।"
माँ ने पूछा "जरूर तुमने कोई शरारत की होगी?"
मोहन ने कहा- "शरारत नहीं की, बस पेड़ पर चढ़कर हवा का आनंद ले रहा था।

माँ ने कहा - "मतलब है तुम कहना चाहते हो भाई ने तुम्हें बेवजह मारा है तो तुम भी उसे जाकर मारो।"

यह सुनकर मोहन उदास हो गए और बोले - "माँ, वे मुझसे बड़े हैं, मैं उन्हें कैसे मार सकता हूँ? आप मुझे बड़ों को मारना क्यों सिखाती हो?"

माँ ने कहा - "बेटे, भाइयों में तो ऐसी नोक-झोंक होती रहती है।"

"नहीं माँ, मैं भैया के तमाचे का जवाब तमाचे से नहीं दे सकता। आप मारने वाले को नहीं रोकती, मुझे मारना सिखाती हो।"

माँ ने तब गांधी जी को गोद में भरकर कहा - तुम्हें ऐसे जवाब कहाँ से सूझते हैं

Date
Page 43

"मोहन" गांधी जी की बचपन की यह घटना हमें सिखाती है कि हिंसा का बदला अहिंसा से भी लिया जा सकता है।